ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL04292
RNI REG. NO. UPBIL/2014/66218 PP. NO.- 308-310

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-13, No.-II, Issues-17, YEAR- Sept. -2020

राजा राममोहन राय एवं ब्रह्म समाज

सरोज शालिनी
शोध अध्येत्री– समाज विज्ञान संकाय इतिहास, मगध विश्वविद्यालय, बोधगया (बिहार), भारत

Received- 13.08.2020, Revised- 18.08.2020, Accepted - 21.08.2020 E-mail: - dr.ramanyadav@gmail.com

सारांश : राजा राममोहन राय (1772–1833) को प्रायः भारतीय पुनर्जागरण का जनक और आधुनिक भारत का निर्माता कहा जाता है। वे बहुमुखी प्रतिभा के धनी थे। उनके द्वारा स्थापित ब्रह्म समाज, जो आधुनिक पाश्चात्य विचारों पर आधारित था, हिन्दू धर्म का पहला सुधार आंदोलन था।

कुंजीभूत शब्द– पुनर्जागरण, आधुनिक भारत, बहुमुखी प्रतिभा, ब्रम्ह समाज, पाश्चात्य, सुधारवादी, दृष्टिकोण।

एक सुधारवादी के रूप में राम राममोहन राय, मानवीय प्रतिष्ठा के आधुनिक वैज्ञानिक दृष्टिकोण एवं सामाजिक समानता के सिद्धांत में विश्वास रखते थे। वे एकेश्वरवाद में विश्वास रखते थे। उन्होंने 1809 में एकेश्वरवादियों को उपहार नामक प्रसिद्ध पुस्तक लिखी। अपने मत के समर्थन में उन्होंने वेदों एवं उपनिषदों के बंगाली अनुवाद लिखे तथा स्पष्ट किया कि प्राचीन हिन्दू धर्मशास्त्र भी एकेश्वरवाद का समर्थन करते हैं।

1814 में उन्होंने कलकत्ता में 'आत्मीय सभा' (या मित्रों का समाज) की स्थापना की तथा मूर्तिपूजा, जाति प्रथा की कठोरता, अर्थहीन रीति–रिवाजों तथा अन्य सामाजिक बुराइयों की भर्त्सना की। एकेश्वरवाद के कट्टर समर्थक राजा राममोहन राय ने स्पष्ट किया कि वे सभी धर्मों की मौलिक समानता में विश्वास रखते हैं। उन्होंने दूसरे धर्मों की उन बातों को ग्रहण किया, जिन्हें वे हिन्दू धर्म के योग्य समझते थे।

उनके विचारानुसार मनुष्य को स्वयं धार्मिक ग्रंथों का अध्ययन और रीति–रिवाजों का पालन करना चाहिए। 1820 में उन्होंने प्रीसेप्स ऑफ जीसस नामक पुस्तक लिखी, जिसमें उन्होंने 'न्यू टेस्टामेंट' के नैतिक एवं दार्शनिक संदेश को उसकी चमत्कारिक कहानियों से पृथक करने का प्रयास किया। उन्होंने न्यू टेस्टामेंट के नैतिक एवं दार्शनिक संदेशों की प्रशंसा की। उन्होंने ईसाई धर्म के भी अनेक गलत रीति–रिवाजों को लोगों के सामने रखा। उनके इस प्रयास से उन्हें इसाई मिशनरियों का गुस्सा झेलना पड़ा तथा उनके कई ईसाई मित्र उनसे निराश हो गये क्योंकि उन्हें एक गलतफहमी थी कि राजा राममोहन राय लोगों को हिन्दू धर्म त्याग कर ईसाई बनने के लिये प्रोत्साहित कर रहे थे। अपने विचारों एवं उद्देश्यों को साकार करने के लिये उन्होंने ब्रह्म सभा (जो आगे चलकर ब्रह्म समाज बना) की स्थापना की। वे सामाजिक सुधार के द्वारा लोगों का के राजनीतिक उत्थान करना चाहते थे तथा उनें राष्ट्रप्रेम की भावना जगाना चाहते थे।

अगस्त, 1828 में राजा राममोहन राय ने 'ब्रह्म सभा' का गठन किया, जिसे बाद में नाम परिवर्तित कर 'ब्रह्म समाज' कहा जाने लगा। ह्मम समाज के अनुसार, ईश्वर एक है और सभी सद्गुणों का केन्द्र व भंडार है। परंतु परमात्मा निर्गुण एवं निराकार है। वह न कभी जन्म लेता है न कभी मरता है। वह सर्वव्यापी, सर्वशक्तिमान, सृष्टि का पालनकर्ता तथा अमर है, इसीलिये मूर्ति पूजा अनावश्यक है। ब्रह्म समाज के भवन में किसी मूर्ति, चित्र, पेन्टिंग इत्यादि की पूजा करने की अनुमति नहीं थी। वे धार्मिक पुस्तकों के अध्ययन या पूजा में भी विश्वास नहीं रखते थे क्योंकि उनके अनुसार कोई भी पुस्तक त्रुटिरहित नहीं हो सकती है। हिन्दू धर्म का शुद्धीकरण एवं एकेश्वरवाद या निर्गुण परमात्मा में विश्वास, ब्रह्म समाज का सबसे प्रमुख उद्देश्य था। उनके ये उद्देश्य तर्क एवं वेदों तथा उपनिषदों की शिक्षाओं पर आधारित थे। ब्रह्म समाज ने सर्व–धर्म समभाव पर बल दिया। उसके अनुसार, सभी धर्मों में सत्य निहित है, अतः व्यक्ति को अपने धर्म के साथ सभी धर्मों का आदर करना चाहिए। ब्रह्म समाज, नैतिकता पर बल देता था एवं कर्मफल में उसका विश्वास था। ब्रह्म समाज के समस्त कार्यों में अहिंसा का स्थान प्रमुख था। उसके सभाभवन में किसी प्रकार की जीव हिंसा नहीं हो सकती थी।

राजा राममोहन राय का उद्देश्य किसी नये धर्म की स्थापना करना नहीं था। अपितु, वे हिन्दू धर्म का शुद्धीकरण करना चाहते थे, जो उनके अनुसार विभिन्न बुराइयों से जकड़ा हुआ है। राजा राममोहन राय के सुधारवादी एवं प्रगतिशील विचारों का तत्कालीन हिन्दू रूढ़िवादियों ने कड़ा विरोध किया। राजा राधाकांत देव ने ब्रह्म समाज के सिद्धांतों का विरोध करने हेतु 'धर्म सभा' का

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-13, No.-II, Issues-17, YEAR- Sept. -2020

गठन किया। 1833 में ब्रिस्टल (इंग्लैण्ड) में राजा राममोहन राय का निधन हो जाने से ब्रह्म समाज को गहरा आघात लगा।

ब्रह्म समाज के योगदान को निम्न प्रकार से वर्णित किया जा सकता है:

1. बहुदेववाद तथा मूर्तिपूजा का विरोध।
2. बहुपत्नी प्रथा एवं सती प्रथा का विरोध।
3. विधवा विवाह का समर्थन एवं बाल विवाह का विरोध।
4. नैतिकता पर बल, कर्मफल में विश्वास, सर्वधर्म समभाव, निर्गुण ब्रह्म की उपासना।
5. धार्मिक पुस्तकों, पुरुषों एवं वस्तुओं की सर्वोच्चता में अविश्वास।
6. छुआछूत, अंधविश्वास, जातिगत भेदभाव का विरोध।
7. बांग्ला एवं अंग्रेजी शिक्षा के प्रचार–प्रसार को समर्थन।

समाज सुधार हेतु राजा राममोहन राय के प्रयास : राजा राममोहन राय ने सती प्रथा का कड़ा विरोध किया। वर्ष 1818 में उन्होंने अपना सती विरोध अभियान आरंभ किया। सर्वप्रथम उन्होंने इस सामाजिक कुरीति के विरूद्ध जनमत तैयार करने का प्रयास प्रारंभ किया। एक ओर उन्होंने पुरातन हिन्दू शास्त्रों का प्रमाण देकर धार्मिक ठेकेदारों को दिखलाया कि वे सती प्रथा की अनुमति नहीं देते, दूसरी ओर उन्होंने लोगों को तर्कशक्ति, नैतिकता, मानवीयता तथा दयाभाव की दुहाई देकर इस कुप्रथा के विरूद्ध आवाज उठाने के लिये प्रेरित किया। उन्होंने शमशानों की यात्रा की तथा विधवाओं के रिश्तेदारों को समझा कर उन्हें सती होने से रोकने के अथक प्रयास किये। उन्होंने समान विचारों वाले व्यक्तियों की सहायता से कई ऐसे समूहों का निर्माण किया जो उन लोगों पर कड़ी निगाह रखते थे, जो पुरातन अंधविश्वास या गहनों के लालच में विधवाओं को सती होने के लिये उकसाते थे। राजा राममोहन राय के अथक प्रयत्नों से इस दिशा में काफी प्रगति हुई। उन्होंने सरकार से अपील की कि इस बर्बर प्रथा को रोकने के लिये वह कड़े कानून बनाये। इसी के पश्चात 1829 में लार्ड विलियम बैंटिक ने एक कानून बनाकर सती प्रथा को गैर–कानूनी घोषित कर दिया।

राजा राममोहन राय ने स्त्रियों की हीन दशा का भी कट्टर विरोध किया। वे स्त्रियों की निम्न सामाजिक दशा तथा उनके साथ किये जा रहे भेदभाव से बहुत दुखी हुए। उन्होंने स्त्रियों को सम्पत्ति का अधिकार देने की भी मांग की। वे स्त्रियों को शिक्षा देने, विधवा विवाह को प्रारंभ करने, सती प्रथा को समाप्त करने तथा बहु–पत्नी विवाह को गैर–कानूनी घोषित करने के पक्षधर थे। स्त्रियों की दशा सुधारने के लिये उन्होंने मांग की कि उन्हें पैतृक एवं विरासत सम्पत्ति संबंधी अधिकार मिलने चाहिए।

राजा राममोहन राय आधुनिक पाश्चात्य शिक्षा के प्रचार–प्रसार समर्थक थे। उन्होंने डेविड हेअर को 1817 में हिन्दू कालेज की स्थापना में सहायता की तथा उसके द्वारा प्रस्तुत की गयी विभिन्न शिक्षा संबंधी योजनाओं का समर्थन किया। उन्होंने अपने खर्चे पर 1817 में कलकत्ता में अंग्रेजी स्कूल खोला, जिसमें फ्रांस के प्रसिद्ध दार्शनिकों–दांते, रूसो एवं वाल्टेयर के दर्शन की शिक्षा दी जाती थी। 1825 में उन्होंने वेदांत कालेज की स्थापना की जिसमें भारतीय विद्या और पाश्चात्य भौतिक विज्ञान एवं सामाजिक विज्ञान की शिक्षा दी जाती थी। बंगाली भाषा को समृद्ध बनाने हेतु उन्होंने बंगला, व्याकरण की रचना की तथा बंगाली पद्य का निर्माण किया।

राजा राममोहन राय की विभिन्न भाषाओं पर गहरी पैठ थी। वे संस्कृत, फारसी, अरबी, अंग्रेजी, फ्रेंच, लैटिन, ग्रीक तथा अबरी जैसी एक दर्जन भाषाओं के ज्ञाता थे। विभिन्न भाषाओं के ज्ञान के कारण उन्होंने विभिन्न भाषाओं की अनेक पुस्तकों का अध्ययन किया। उन्हें भारतीय पत्रकारिता का जनक कहा जाता है। उन्होंने बंगाली, हिन्दी तथा अंग्रेजी में अनेक पत्र–पत्रिकाओं का प्रकाशन तथा सम्पादन किया। इनके माध्यम से वे जनता को शिक्षित करते थे तथा उनके दुखों एवं कठिनाइयों को सरकार के समक्ष प्रस्तुत करते थे।

एक राजनीतिज्ञ के रूप में राजा राममोहन राय ने बंगाल के जमींदारों की उत्पीड़ित कार्यवाहियों की घोर निन्दा की तथा रैयतों द्वारा दिये जाने वाले लगान की अधिकतम मात्रा निर्धारित करने की मांग की। उन्होंने कर मुक्त भूमि पर सरकार द्वारा पुनः कर लगाने के प्रयासों का विरोध किया। उन्होंने निर्यात की जाने वाली भारतीय वस्तुओं पर प्रशुल्क घटाने की मांग की तथा ईस्ट इंडिया कम्पनी के व्यापारिक विशेषाधिकारों को समाप्त करने हेतु सरकार को ज्ञापन दिया। वे उच्च सेवाओं के भारतीयकरण तथा कार्यपालिका को न्यायपालिका से पृथक किये जाने के कट्टर समर्थक थे। उन्होंने मुकदमों की सुनवाई जूरी प्रथा के माध्यम से करने एवं भारतीयों तथा यूरोपियों के मध्य न्यायिक समानता की भी मांग की।

राजा राममोहन राय का राजनीतिक दृष्टिकोण अंतर्राष्ट्रीय था। वे अंतर्राष्ट्रीयता और विभिन्न राष्ट्रों के पारस्परिक सहयोग में दृढ़ विश्वास रखते थे। वे अंतर्राष्ट्रीय स्वतंत्रता, समानता एवं न्याय के हिमायती थे। इससे स्पष्ट

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-13, No.-II, Issues-17, YEAR- Sept. -2020

होता है कि उन्हें तत्कालीन अंतर्राष्ट्रीय परिस्थितियों की गहरी समझ थी। उन्होंने स्पेन, अमेरिका तथा नेपल्स के स्वतंत्रता अभियानों का समर्थन किया। जब वे इंग्लैंड में रह रहे थे तब उन्होंने आयरलैण्ड के जमींदारों द्वारा वहां के किसानों पर किये जा रहे अत्याचार की निंदा की तथा घोषणा की कि यदि इस संबंध में इंग्लैण्ड की संसद में जो सुधार विधेयक लाया गया है यदि वह गिर गया तो वे इंग्लैण्ड छोड़कर चले जायेंगे।

अनेक प्रसिद्ध व्यक्तियों यथा—डेविड हेअर, अलेक्जेंडर डफ, देवेन्द्रनाथ टैगोर, पी.के. टैगोर, चंद्रशेखर देव तथा ताराचंद चक्रवर्ती इत्यादि उनके प्रमुख सहयोगी थे।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. राजीव अहीर : आधुनिक भारत का इतिहास, स्पेक्ट्रम बुक्स प्रा0 लि0 जनकपुरी, नई दिल्ली
2. विपिन चन्द्रा : भारत का स्वतंत्रता संघर्ष
3. मृदुला मुखर्जी : भारत का स्वतंत्रता संघर्ष
4. शिशिर कुमार घोष एवं मोतीलाल घोष : अमृत बाजार पत्रिका, जैसोर जिला, 1868
5. बंकिमचन्द्र चटर्जी : बंगदर्शन, कलकत्ता, 1873
6. राबर्ट नाइट द्वारा प्रारंभः इंडियन स्टेट्समैन, कलकत्ता, 1875
7. दयाल सिंह मजीठिया : ट्रिब्यून (दैनिक), लाहौर, 1881
8. जी.एस.अय्यर : युगांतर, मद्रास
9. बारीन्द्र कुमार घोष एवं भूपेंन्द्रनाथ दत्त : संध्या, बंगाल, 1906
10. ब्रह्मबांधव उपाध्याय : काल, बंगाल 1906

*****